शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न अध्यात्म की आवश्यकता

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

बीसवीं शताब्दी के मध्य और इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआती पच्चीस वर्षों में विज्ञान ने जिस प्रकार से विकास किया है, वह अचंभित करने वाला है। मनुष्य के उर्वर दिमाग ने कल्पना की ऊंची उड़ान भरकर आज असंभव शब्द को शब्दकोश से बेदखल कर दिया है। विज्ञान ने मनुष्य मस्तिष्क को नियंत्रित करने की कला सीख ली है। ईश्वर प्रदत्त बुद्धि से कृत्रिम बुद्धि बनाकर वह जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। आज का मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता से परिचालित हो रहा है। बाजार की ताकतों ने इसका उपयोग मनुष्य की विचार प्रक्रिया को समझकर उसकी इच्छाओं, कामनाओं की पूर्ति में और इजाफा कर दिया है। इधर विचार किया और उधर विचारों के अनुरूप पूरा बाजार आंखों के सामने पलभर में आकर खड़ा हो जाता है। विज्ञान के कल्पवृ क्ष के नीचे बैठकर मनुष्य अपनी अनंत लालसाओं को तृप्त करने का निरंतर प्रयास कर रहा है, लेकिन ये इच्छाएं पूरी होने का नाम ही नहीं ले रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नकारात्मक पहलुओं को देखकर ही इसे नियंत्रित करने के प्रयास भी शुरू हो गए हैं। अधिक जनंसख्या वाले देशों में बेरोजागारी का भयानक संकट उपस्थित होने के संकेत मिलने लगे हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि 2030 तक भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण 30 करोड़ लोग बेरोजगार हो जाएंगे। बार-बार एक ही प्रकार का काम करने के लिए जहां मानव श्रम का उपयोग होता है, उसका स्थान कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक ने ले लिया है। कम समय और सीमित खर्च में गुणवत्तापूर्ण सेवा का लोभ इस तकनीक को विस्तार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रारंभिक रूप में यह तकनीक अभी महंगी है, लेकिन जैसे-जैसे यह तकनीक आगे बढ़ेगी, वैसे-वैसे इसकी पहुंच भी बढ़ जाएगी। इसलिए यह आवश्यक है कि समय रहते इस तकनीक के सभी पहलुओं पर गहन विचार-विमर्श होना चाहिए। विज्ञान पर अंकुश तो नहीं लगाया जा सकता है, परंतु अपने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग अवश्य किया जा सकता है। इसमें भारत का आध्यात्मिक ज्ञान सहायता कर सकता है। मनुष्यता के विचार को सर्वोपरि रखते हुए यह असंभव नहीं है। जिस प्रकार विज्ञान संशोधन के लिए वैज्ञानिक गहराई से पदार्थ विज्ञान का अध्ययन करते हैं, जिससे पदार्थ अपना सब कुछ रहस्य उनके सामने उजागर कर देते हैं, वैसे ही आध्यात्मिक महापुरुषों को विज्ञान युग के अनुरूप अपने चिंतन में संशोधन करना चाहिए। अब पुराने जमाने का चिंतन समाज परिवर्तन में सहायक नहीं होगा। शब्द तो पुराने ही रहेंगे, परंतु उनमें नया अर्थ भरने की जरूरत है। पुराने शब्दों की एक ताकत है। उन्हें हजारों वर्षों से घोटा गया है। अब उनका विज्ञान संपन्न अर्थ होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न अध्यात्म और आध्यात्मिक दृष्टि संपन्न विज्ञान इस धरती पर स्वर्ग उतार लाने में सक्षम होगा। सत्य, प्रेम, करुणा की आध्यात्मिक दृष्टि से विज्ञान निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष होकर मनुष्य की सेवा करेगा। तब विज्ञान की शक्तियों का सकारात्मक उपयोग हो सकेगा।